HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (Empire Expansion of Akbar-1)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 56

"अकबर का उत्तर भारत साम्राज्य विस्तार"

(Empire Expansion of Akbar)

अकबर के साम्राज्य विस्तार को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) उत्तर भारत की विजय, (2) दक्षिण भारत की विजय ।

(1) उत्तर भारत की विजय:-

पानीपत के युद्ध के बाद 1559 में अकबर ने ग्वालियर पर 1560 में अकबर के सेनापति जमाल खान ने जौनपुर पर तथा 1561 में चुनार पर अधिकार कर लिया।

मालवा विजय :-

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D College)

यहां के शासक बाज बहादुर को 1561 में मुगल सेना ने आधम खा के नेतृत्व में परास्त कर दिया। 29 मार्च 1561 को मालवा की राजधानी 'सारंगपुर' पर मुगल सेनाओं ने अधिकार कर लिया। अकबर ने आधम खान को वहां की सुबेदारी सौंपी। । 1562 में मीर मुहम्मद मालवा का सुबेदार बना । यह एक अत्याचारी प्रवृत्ति का व्यक्ति था । बाजबहादुर ने दक्षिण के शासकों के सहयोग से पुनः मालवा पर अधिकार कर लिया। पीर मुहम्मद भागते समय नर्मदा नदी में डूब कर मर गया। इस बार अकबर ने अब्दुल्ला खां उजबेग को बाजबहादुर को परास्त करने के लिए भेजा बाजबहादुर पराजित होकर अकबर की अधीनता स्वीकार कर अकबर के दरबार में द्वि-हजारी मनसब प्राप्त किया।

1564 में अकबर ने गोंडवाना विजय हेतु 'आसफ खां' को भेजा । तत्कालीन गोंडवाना राज्य की शासिका महोबा की चन्देल राजकुमारी रानी दुर्गावती जो अपने अल्पायु पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थी, ने आसफ खां के नेतृत्व वाली मुगल सेना का डट कर मुकाबला किया । अन्ततः मां और पुत्र दोनों वीरगति को प्राप्त हुए। 1564 में गोंडवाना मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया।

राजस्थान विजय:-

राजस्थान के राजपूत शासक अपने पराक्रम, आत्मसम्मान एवं स्वतन्त्रता के लिए प्रसिद्ध थे। अकबर ने राजपूतों के प्रति विशेष नीति अपनाते हुए उन राजपूत शासकों से मित्रता एवं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये

Dr CUDDY KUMARI (A.N.D College)

जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। जिन्होंने अधीनता स्वीकार नहीं की उनसे युद्ध के द्वारा अकबर ने अधीनता स्वीकार करवाने का प्रयत्न किया। के

(1) आमेर (जयपुर)-

1562 में अकबर द्वारा अजमेर की शेख मुईनुद्दीन चिश्ती दरगाह की यात्रा के समय उसकी मुलाकात आमेर के शासक राजा 'भारमल' से हुई । भारमल प्रथम ऐसा राजपूत शासक था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की । कालान्तर में भारमल या बिहारी मल की पुत्री से अकबर ने विवाह कर लिया, जिससे जहांगीर पैदा हुआ । अकबर ने भारमल के (दत्तक) भगवान दास एवं पौत्र मान सिंह को उच्च मनसब प्रदान किया।

(2) मेड़ता-

मेड़ता का शासक जयमल मेवाड़ के राजा उदय सिंह का सामन्त था | मेड़ता पर आक्रमण के समय मुगल सेना का नेतृत्व 'सैरफुद्दीन कर रहा था । इसने जयमल एवं देवदास से मेड़ता की छीन कर 1562 में मुगलों के अधीन कर दिया।

(3) मेवाड़-

मेवाड़ राजस्थान का एक मात्र सा राज्य था जहाँ के राजपूत शासक ने मुगल शासन का सदैव विरोध किया । अकबर का समकालीन मेवाड़

Dr GUDDY KUMARI (A N D College)

शासक सिसोदिया वंश का राणा उदय सिंह' था जिसने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता नहीं स्वीकारा। अकबर ने मेवाड़ को अपने अधीन करने के लिए 1567 में चित्तौड़ के किले पर आक्रमण कर दिया । उदय सिंह ने किले की सुरक्षा का भार जयमल' व फत्ता (फतेह सिंह) को सौप कर समीप की पहाड़ियो में खो गया । इन दो वीरों ने बड़ी बहादुरी से मुगल सेना का मुकाबला किया पर अन्ततः दोनों युद्ध क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए । अकबर ने किले पर अधिकार के बाद करीब 30,000 राजपूतों का कल्ल करवा दिया। यह नरसंहार अकबर ने नाम पर एक बड़े धब्बे के रूप में माना गया जिसे मिटाने के लिए अकबर ने आगरा किले के दरवाजे पर जयमल एवं फत्ता की वीरता की स्मृति में उनकी प्रस्तर मूर्तियां स्थापित करवायी। 1568 में मुगल सेना ने मेवाड़ की राजधानी एवं चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया ।

रणथम्भौर विजय (1569):-

रणथम्भौर के शासक बूंदी के हाड़ा राजपूत 'सुरजन राय' से अकबर ने 18 मार्च 1569 को दुर्ग अपने कब्जे में ले लिया।

कालिंजर विजय (1569):- उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में स्थित यह किला अभेद्य माना जाता था । इस पर रीवा के 'राजा रामचन्द्र' का अधिकार था। मुगल सेना ने मजनू खा के नेतृव में आक्रमण कर कालिंजर पर अधिकार कर लिया। राजा रामचन्द्र को इलाहाबाद के समीप एक जागीर दे दी गयी।

Dr GUDDY KUMARI (A.N.D College)

1570 में मारवाड़ के शासक 'राम चन्द्र सेन, बीकानेर के शासक 'कल्याण मल' एवं जैसलमेर के शासक 'रावल हरराय ने अकबर की अधीनता स्वीकार की। इस प्रकार 1570 तक मेवाड़ के कुछ भागों को छोड़ कर शेष राजस्थान के शासकों ने मुगल अधीनता स्वीकार कर ली । अधीनता स्वीकार करने वाले राज्यों में कुछ अन्य थे- डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं प्रतापगढ़ ।

गुजरात विजय (1572-1573)-

गुजरात एक समृद्ध, उन्नतिशील एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था, इसलिए अकबर इसे अपने अधिकार में करने हेतु अधिक उत्सुक था। सितम्बर 1572 में अकबर ने स्वयं ही गुजरात जीतने के लिए प्रस्थान किया । उस समय गुजरात का शासक 'मुजफ्फर खां तृतीय था। करीब डेढ़ महीने के संघर्ष के बाद 26 फरवरी 1573 तक अकबर ने सूरत, अहमदाबाद एवं कम्बे पर अधिकार कर लिया। अकबर 'खाने आजम' मिर्जा अजीज कोका को गुजरात का गवर्नर नियुक्त कर वापस आगरा आ गया। पर उसके आगरा पहुँचते ही सूचना मिली कि गुजरात में मुहम्मद हुसैन मिर्जा ने विद्रोह कर दिया है; तुरन्त ही अकबर ने गुजरात की ओर मुड़कर 2 सितम्बर 1573 को विद्रोह को कुचल दिया। अकबर के इस अभियान के बारे में स्मिथ ने "संसार के इतिहास का सर्वाधिक द्रुतगामी आक्रमण कहा गया।

DR GUDDY KUMARI A.N.D College

गुजरात में ही अकबर सर्वप्रथम पुर्तगालियों से मिला और यहीं पर इसने पहली बार समुद्र देखा ।

बिहार एवं बंगाल पर विजय (1574-78)--

बिहार एवं बंगाल पर सुलेमान किरानी अकबर की अधीनता में शासन करता था । किरानी की मृत्यु के बाद इसके पुत्र 'दाऊद ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी । अकबर ने 'मुनीम खा' के नेतृत्व में मुगल सेना को दाउद को परास्त करने के लिए भेजा, साथ ही मुनीम की सहायता हेतू खुद गया। 1574 में 'दाऊद' बिहार से बंगाल भाग गया । अकबर ने बंगाल विजय का सम्पूर्ण दायित्व 'मुनीम खां' को सौप दिया और वापस फतेहपुर सीकरी आ गया। मुनीम खा बंगाल पहुंचकर, दाऊद को सुवर्ण रेखा नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित 'तुर्की नामक स्थान पर 3 मार्च 1575 को परास्त किया । दाऊद की मृत्यु जुलाई 1576 में हो गई । इस तरह से बंगाल एवं बिहार पर मुगलों का अधिकार हो गया।

हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून 1576):-

उदय सिंह की मृत्यु के बाद मेवाड़ का शासक महाराणा प्रताप हुआ। अकबर ने मेवाड़ को पूर्णरूप से जीतने के लिए अप्रैल 1576 में आमेर के राजा मान सिंह एवं आसफ ख के नेतृत्व में मुगल सेना को आक्रमण के लिए भेजा । दोनों सेनाओं के मध्य अरावली पहाड़ी की हल्दी घाटी

Dr GUDDY KUMARI (A.N.D College)

नामक शाखा के बीच के मैदान में संघर्ष हुआ। परिणाम मुगल सेना के पक्ष में रहा । राणा प्रताप को अपने को सुरक्षित रखने हेतु समीप की पहाड़ियों में जाना पड़ा। यह अभियान भी मेवाड़ पर पूर्ण अधिकार के बिना ही समाप्त हो गया।

1599 में राणा प्रताप की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अमर सिंह उत्तराधिकारी हुआ। इसके शासन काल 1599 में मानसिंह के नेतृत्व में एक बार फिर मुगल सेना ने आक्रमण किया । अमरसिंह की पराजय के बाद भी मेवाड़ अभियान अधुरा रहा जिसे बाद में जहांगीर ने पूरा किया।

काबुल पर विजय (1581):--

'मिर्जा हकीम' जो रिश्ते में अकबर का सौतेला भाई था, 'काबुल' पर स्वतन्त्र शासक के रूप में शासन कर रहा था। सम्राट बनने की महत्वाकांक्षा में इसने पंजाब पर आक्रमण किया । इसके विद्रोह को कुचलने के लिए अकबर ने 8 फरवरी 1581 को एक बृहद सेना के साथ अफगानिस्तान की ओर प्रस्थान किया । अकबर के आने का समाचार सुनकर मिर्जा हाकीम काबुल की ओर वापस हो गया। 10 अगस्त 1581 को अकबर के काबुल पहुँचने पर मिर्जा ने सम्राट के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया । अकबर ने मिर्जा की बहन 'बख्तुन्निसा बेगम को काबुल की सुबेदारी सौपी । कालान्तर में अकबर ने काबुल को साम्राज्य में मिला कर राजा मान सिंह को सुबेदार बनाया।

Dr GUDDY KUMARI (A.N.D College)

कश्मीर विजय (1585-86):-

अकबर ने कश्मीर पर अधिकार के लिए भगवान दास एवं कासिम खां के नेतृत्व में मुगल सेना को भेजा । मुगल सेना ने थोड़े से संघर्ष के बाद यहां के शासक "युसुफ खाँ' को बन्दी बना लिया। बाद में युसुफ खां के लड़के याकूब ने संघर्ष की शुरुआत की पर श्रीनगर में हुए विद्रोह के कारण उसे मुगल सेना के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा। 1586 में कश्मीर का विलय मुगल साम्राज्य में हो गया ।

सिन्ध विजय (1591):-

अकबर ने अब्दुल रहीम खान खाना' को जीतने का दायित्व सौंपा। 1591 में सिन्ध के शासक 'जानी बेग' एवं खानखाना के मध्य कड़ा संघर्ष हुआ, अन्ततः सिंध पर मुगलों का अधिकार हो गया।

उड़ीसा विजय (1590-92)

1590 में राजा मान सिंह के नेतृत्व में मुगल सेना ने उड़ीसा के शासक 'निसार खां' पर आक्रमण कर आत्मसमर्पण के लिए विवश किया, परन्तु अन्तिम रूप से उड़ीसा को 1592 में मुगल साम्राज्य के अधीन किया गया ।

बलूचिस्तान विजय (1595)-

Dr GUDDY KUMARI (A.N.D College)

'मीर मासूम' के नेतृत्व में मुगल सेनाओ ने 1595 में बलूचिस्तान पर आक्रमण कर वहां के पन्नी अफगानों को हराकर बलूचिस्तान को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

कंधार विजय (1595):-

कन्धार का सूबेदार मुजफ्फर हुसैन मिर्जा' कन्धार को स्वेच्छा से मुगल सरदार 'शाहबेग' को सौंप स्वयं अकबर का मनसबदार बन गया ।

इस तरह अकबर मेवाड़ के अतिरिक्त सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अधिकार करने में सफल हुआ।

आगे भी जारी है

धन्यवाद

Dr GUDDY KUMARI (A.N.D College)